माणडना

संकलन

बा.ब्र. रोहित भैया

(संघस्थ मुनिश्री 108 प्रमाणसागरजी महाराज)

अतिमनोज्ञ मूलनायक श्री 1008 चन्द्रप्रभु भगवान

अतिप्राचीन श्री 1008 आदिनाथ भगवान

सिद्धिदायक श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान

गुणायतन, शिखरजी, मधुवन (झारखण्ड)

पुण्यार्जक

श्री राजकुमार संजयकुमार पाण्ड्या

कम्प्यूटर नेटवर्क, राँची (झारखण्ड)

अनुक्रमणिका

श्री पंचपरमेष्ठी विधान मण्डल	1
श्री 1008 शांतिनाथ विधान मण्डल	2
श्री चौंसठ ऋद्धि विधान मण्डल	3
श्री भक्तामर विधान मण्डल	4
श्री कल्याण मंदिर विधान मण्डल	5
श्री तीर्थंकर विधान मण्डल	6
श्री आचार्य छत्तीसी विधान मण्डल	7
श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान मण्डल	8
श्री कर्मदहन विधान मण्डल	9
श्री कर्मनिर्झरा विधान मण्डल	10
श्री श्रुतस्कन्ध विधान मण्डल	11
श्री गणधर वलय विधान मण्डल	12
श्री णमोकार पैंतीसी विधान मण्डल	13
श्री पंचमेरू विधान मण्डल	14
श्री पंचकल्याणक विधान मण्डल	15
श्री दशलक्षण विधान मण्डल	16
श्री 1008 पार्श्वनाथ विधान मण्डल	17
श्री सिद्धचक्र विधान मण्डल	18
श्री त्रिकाल चौबीसी विधान मण्डल	19
श्री सोलहकारण विधान मण्डल	20
श्री नंदीश्वर विधान मण्डल	21
श्री रविव्रत विधान मण्डल	22
श्री त्रिलोक जिनालय विधान मण्डल	23
श्री चन्दन षष्ठी विधान मण्डल	24
श्री जिनगुण संपत्ति विधान मण्डल	25
श्री जिनसहस्रनाम विधान मण्डल	26
श्री लब्धि विधान मण्डल	27
श्री रत्नत्रय विधान मण्डल	28
श्री सप्तऋषि विधान मण्डल	29
श्री सम्मेद शिखर विधान मण्डल	30

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री पचंपरमेष्ठी विधान मण्डल

व्रत नाम	-	पंचपरमेष्ठी व्रत
व्रतारम्भ तिथि	-	अष्टाह्निका की अष्टमी या सप्तमी से 8 दिन
व्रतावधि	-	4 माह
व्रत विधि	-	पूर्णिमा तक शक्त्यनुसार उपवास करें।
व्रत पूजा	-	पचंपरमेष्ठी पूजा
व्रत जाप मन्त्र	-	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः।
व्रत फल	-	उत्कृष्ट पद प्रदायक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं- अन्तराय कर्म निवारण व्रत, अनन्त चतुर्दशी व्रत, अक्षय तृतीया व्रत, ऋषि पंचमी व्रत, कांजी बारस व्रत, दुख हरण व्रत

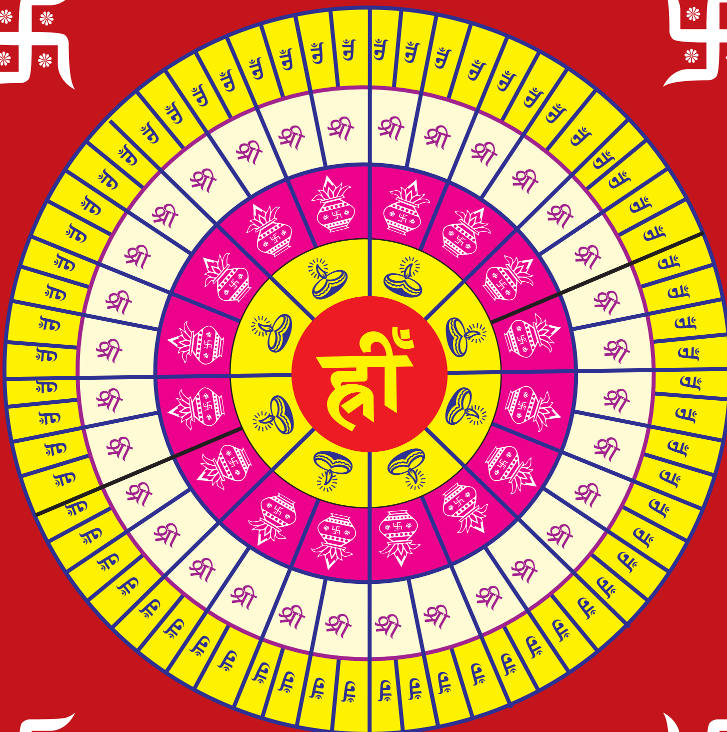

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री 1008 शांतिनाथ विधान मण्डल

व्रत नाम	-	शांतिनाथ तीर्थंकर चक्रवती कामदेव व्रत
व्रतारम्भ तिथि	-	ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दशी
व्रतावधि	-	उत्कृष्ट 5 वर्ष, मध्यम 5 माह
व्रत विधि	-	प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करें
व्रत पूजा	-	श्री शान्तिनाथ पूजा
व्रत जाप मन्त्र	-	ॐ ह्रीं जगच्छान्ति कराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरू कुरू स्वाहा। या ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः।
व्रत फल	-	सर्वोत्कृष्ट पद प्रदायक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं- अज्ञान निवारण व्रत, शील कल्याणक व्रत, षोडश क्रिया व्रत, त्रेपन्न क्रिया व्रत

श्री चौंसठ ऋद्धि विधान मण्डल

व्रत नाम	-	चौंसठ ऋद्धि व्रत
व्रतारम्भ तिथि	-	किसी भी माह की 8 या 14
व्रतावधि	-	64 व्रत
व्रत विधि	-	2, 5, 8, 11 एवं 14 को शक्त्यनुसार उपवास या एकाशन पूर्वक।
व्रत पूजा	-	चौसठ ऋद्धि पूजा
व्रत जाप मन्त्र	-	64 ऋद्धि मन्त्रों में से क्रमशः व्रत के दिन एक मन्त्र की जाप करें।
व्रत फल	-	ऋद्धि कारक

व्रत नाम	–	भक्तामर व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	किसी भी माह की अष्टमी
व्रतावधि	–	1 वर्ष
व्रत विधि	–	व्रत के दिन उपवास करें। अष्टमी एवं चतुर्दशी को व्रत करते हुए 48 दिन करें।
व्रत पूजा	–	भक्तामर पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रीं क्लीं ऐं श्रीं अर्हं श्रीवृषभानाथ-तीर्थंकराय नमः।
व्रत फल	–	संकट, प्राकृतिक प्रकोप, महामारी, असाध्यरोगादि निवारक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं- अधिक सप्तमीव्रत, एकेन्द्रिय जाति निवारण व्रत, पर्व मंगल व्रत, मंगलभूषण व्रत

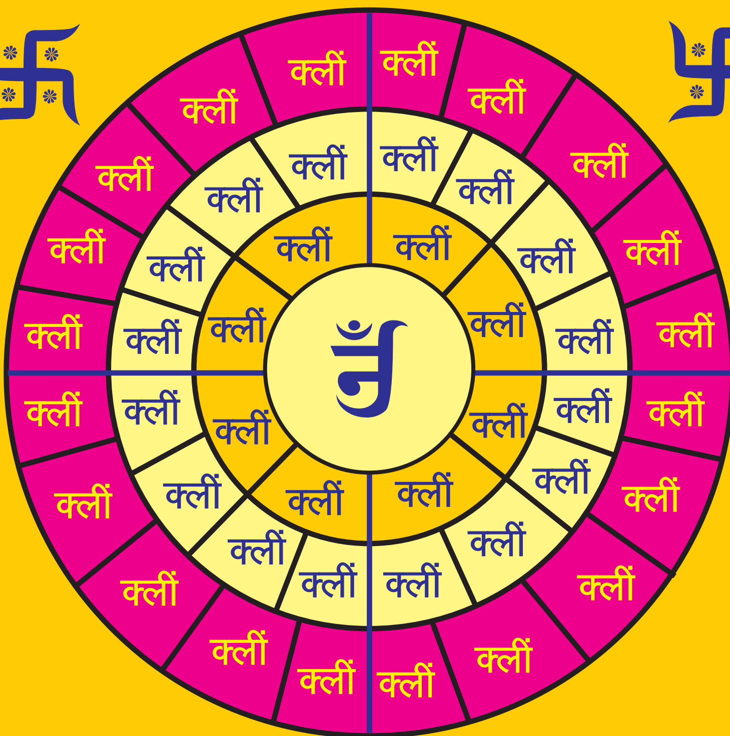

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री कल्याण मंदिर विधान मण्डल

व्रत नाम	-	कल्याण मंदिर व्रत
व्रतारम्भ तिथि	-	किसी भी मास की चतुर्दशी
व्रतावधि	-	44 चतुर्दशी पूर्वक
व्रत विधि	-	प्रोषध पूर्वक उपवास
व्रत पूजा	-	कल्याणमन्दिर स्तोत्र पूजा
व्रत जाप मन्त्र	-	ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं कमठोपद्रवजित-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।
व्रत फल	-	उपसर्ग निवारक

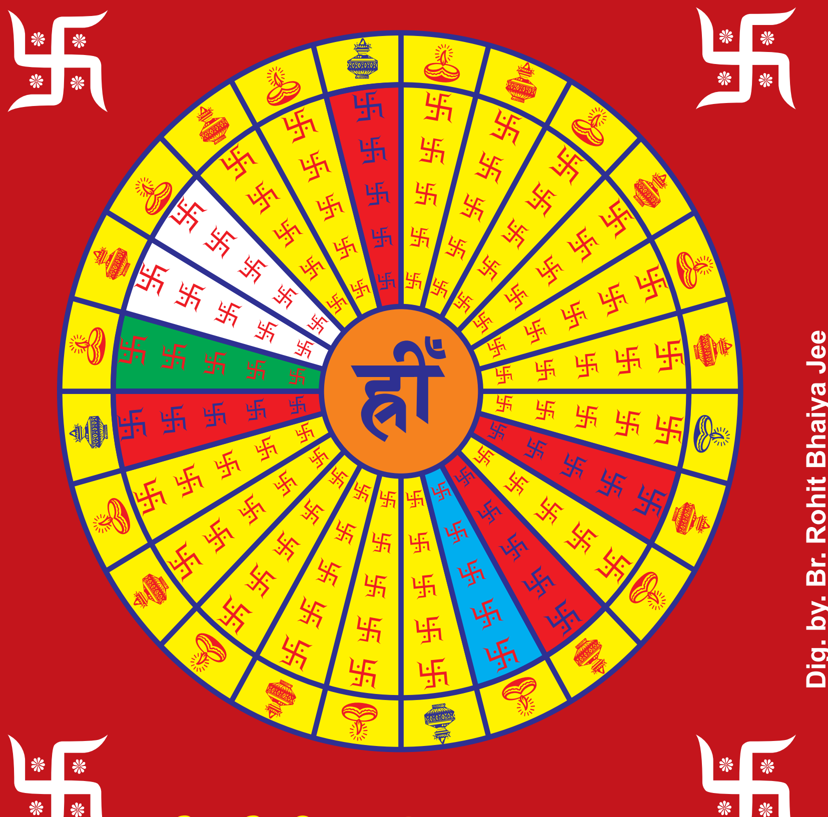

श्री तीर्थंकर विधान मण्डल

व्रत नाम	–	तीर्थंकर व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	भगवान आदिनाथ के किसी एक कल्याणक की तिथि
व्रतावधि	–	24 दिन
व्रत विधि	–	शेष तीर्थंकरों के भी उसी कल्याणक की तिथि का उपवास
व्रत पूजा	–	चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।
व्रत फल	–	सोलह कारण भावनावर्धक

श्री आचार्य छत्तीसी विधान मण्डल

व्रत नाम	-	आचार्य छत्तीसी व्रत
व्रतारम्भ तिथि	-	शुभ माह के शुक्ल पक्ष की कोई भी तिथि
व्रतावधि	-	36 दिन
व्रत विधि	-	इस व्रत में तीज के 3 व्रत, पंचमी के 5 व्रत, षष्ठी के 6 व्रत, दशमी के 10 व्रत एवं बारस के 12 व्रत उपवास से उत्तम, नीरस भोजन से मध्यम एवं एकाशन से जघन्य रूप से करते हैं।
व्रत पूजा	-	आचार्य छत्तीसी पूजा
व्रत जाप मन्त्र	-	ॐ ह्रूँ श्री षट् त्रिंशत् गुणान्वित आचार्य परमेष्ठिभ्यो नमो नमः। (प्रत्येक गुण के अनुसार जाप अलग से करें।)
व्रत फल	-	परम्परा से मोक्ष

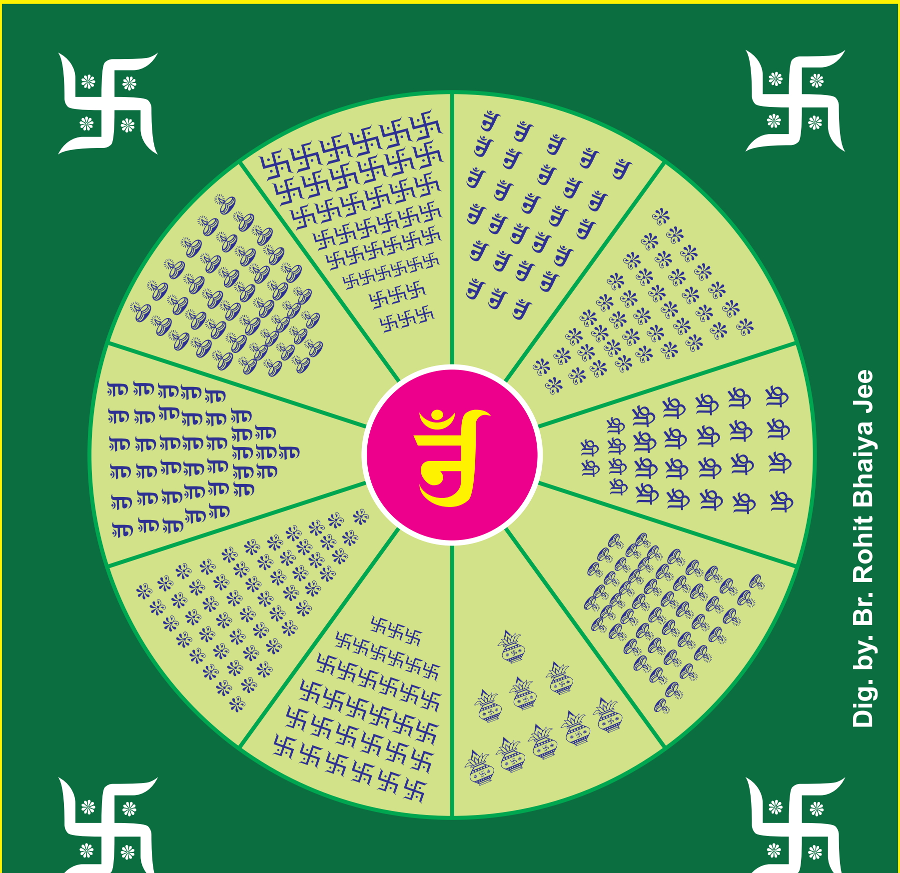

श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान मण्डल

व्रत नाम	–	तत्त्वार्थ सूत्र व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	किसी भी माह की कोई भी अष्टमी
व्रतावधि	–	10 दिन, उत्कृष्ट 357 दिन
व्रत विधि	–	उपवास पूर्वक
व्रत पूजा	–	तत्त्वार्थ सूत्र पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव-द्वादशांग-सारभूत-श्रीतत्त्वार्थसूत्राय नमः।
व्रत फल	–	तत्त्व सिद्धांतवर्धक एवं मोक्षमार्ग प्रदायक

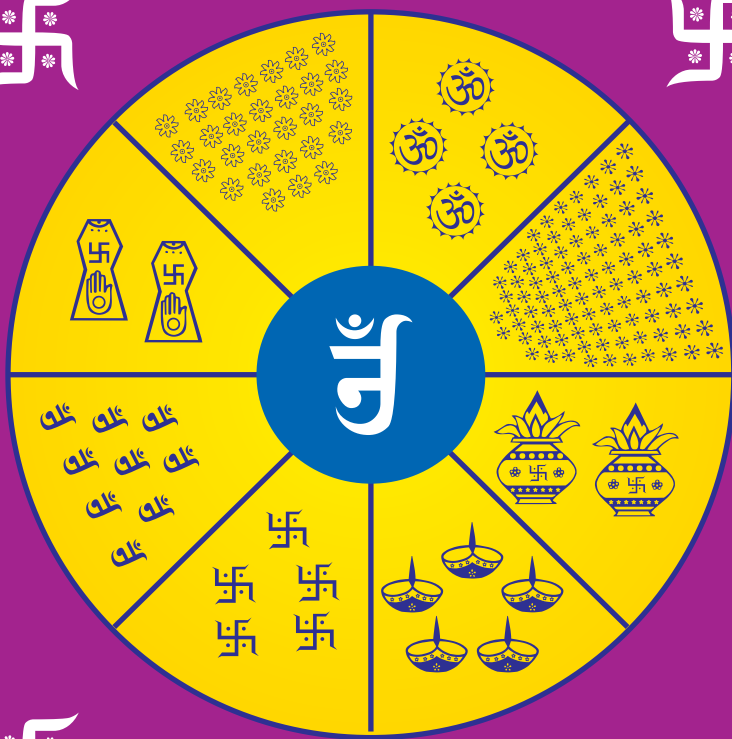

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री कर्मदहन विधान मण्डल

व्रत नाम - कर्मदहन व्रत

व्रतारम्भ तिथी- आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी

व्रतावधि - 156 उपवास पूर्वक

व्रत विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास एवं व्रत सम्बन्धी जाप करें।
7 चतुर्थी के 7 उपवास 3 सप्तमी के 3 उपवास
36 नवमी के 36 उपवास 1 दशमी का 1 उपवास
16 द्वादशी के 16 उपवास 85 चतुर्दशी के 85 उपवास 8 अष्टमी के 8 उपवास

व्रत पूजा - लघु कर्मदहन विधान

व्रत जाप मन्त्र- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै नमः।

व्रत फल - अष्टकर्म निवारक एवं पारमार्थिक सुख दायक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं- उपसर्ग निवारण व्रत, कनकावली व्रत, कर्मचुर व्रत, कर्मक्षय व्रत, कवल चंद्रायण व्रत, चारित्र शुद्धि व्रत (1234 व्रत), मुक्तावली व्रत, सिंह निष्क्रीड़ित व्रत, गुणस्थान एवं कर्म प्रकृति निवारण व्रत

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री कर्मनिर्झरा विधान मण्डल

व्रत नाम	–	कर्मनिर्झरा व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	भाद्रपद शुक्ल द्वादशी
व्रतावधि	–	8 वर्ष
व्रत विधि	–	12, 13, 14 तीन दिन तक शक्त्यनुसार उपवास या एकाशन करें।
व्रत पूजा	–	कर्मनिर्झर पूजन
व्रत जाप मन्त्र	–	प्रथम दिन – ॐ ह्रीं द्वादशमिथ्यात्वनिवारकाय भगवज्जिनाय नमः।
		द्वितीय दिन – ॐ ह्रीं द्वादशतप-धारकाय-भगवज्जिनाय नमः।
		तृतीय दिन – ॐ ह्रीं द्वादशभावना-चिन्तक-भगवज्जिनाय नमः।
व्रत फल	–	अशुभ कर्म निवारक एवं पारमार्थिक सुख दायक

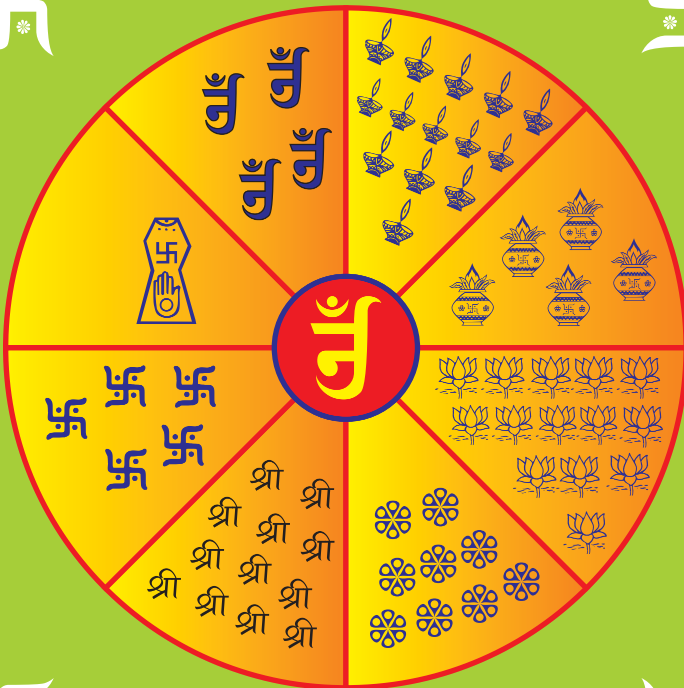

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री श्रुतस्कन्ध विधान मण्डल

व्रत नाम	-	श्रुतस्कन्ध व्रत
व्रतारम्भ तिथि	-	कार्तिक शुक्ल चतुर्थी
व्रतावधि	-	14 वर्ष
व्रत विधि	-	कार्तिकशुक्ल 4 के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें
व्रत पूजा	-	चौबीस तीर्थंकर एवं श्रुतस्कन्ध पूजा
व्रत जाप मन्त्र	-	ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव-स्याद्वाद-नयगर्भित-द्वादशांग श्रुतज्ञानाय नमः।
व्रत फल	-	स्वर दोष निवारक, तीक्ष्ण बुद्धि प्रदायक एवं ज्ञानवर्धक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं- श्रुत कल्याणक व्रत, श्रुत पचंमी व्रत, श्रुतज्ञान व्रत, श्रुतावतार व्रत, श्रुति कल्याणक व्रत, निश्यच नय व्रत, भावना द्वात्रिंशतिका व्रत, सरस्वती व्रत

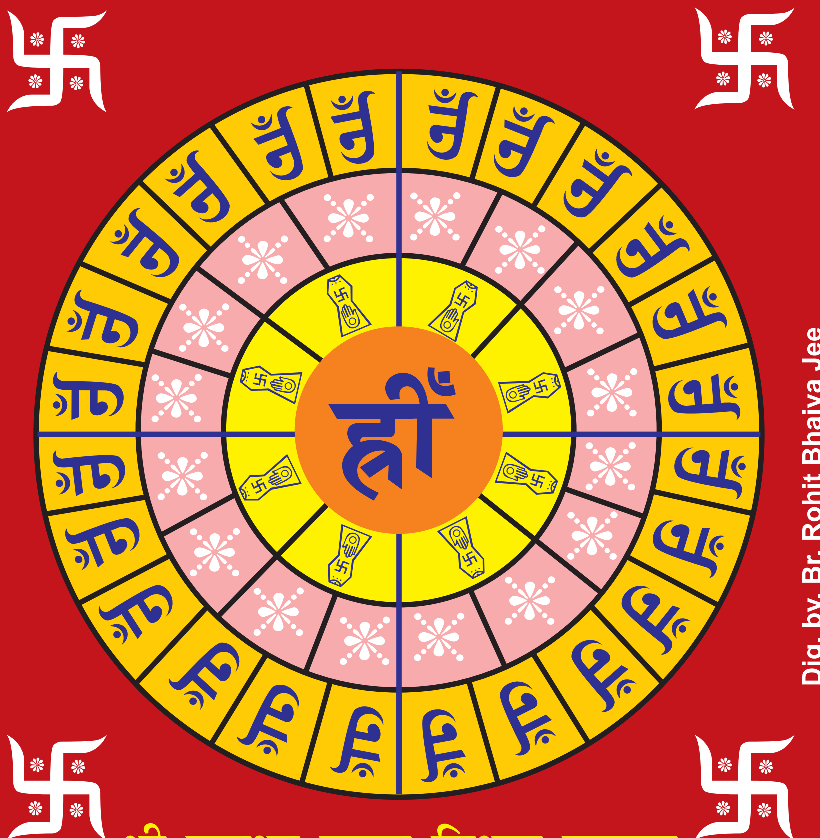

श्री गणधर वलय विधान मण्डल

व्रत नाम	–	गणधर वलय व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	किसी भी अष्टाह्निका की अष्टमी
व्रतावधि	–	24 वर्ष, 12 वर्ष, 9 वर्ष, 8 वर्ष या 3 वर्ष
व्रत विधि	–	अष्टमी से पूर्णिमा तक उपवास/एकाशन शक्त्यनुसार
व्रत पूजा	–	श्री गणधरवलय पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः।
व्रत फल	–	कार्यसिद्धि दायक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं- चतुरशीति गणधर व्रत

श्री णमोकार पैंतीसी विधान मण्डल

व्रत नाम – णमोकार पैंतीसी व्रत

व्रतारम्भ तिथि – आषाढ़ शुक्ल सप्तमी

व्रतावधि – 45 दिन (1 1/2 वर्ष की अवधि में)

व्रत विधि – आषाढ़ शुक्ल सप्तमी, श्रावण माह की दो सप्तमी, भाद्रपद मास की दो सप्तमी, आश्विन माह की दो सप्तमी इस प्रकार सात सप्तमी के सात उपवास, कार्तिक कृष्ण पचंमी से पौष कृष्ण पंचमी तक पाँच पंचमी के पाँच उपवास, पौष कृष्ण चतुर्दशी से चैत्रकृष्ण चतुर्दशी तक सात चतुर्दशी के सात उपवास, चैत्र शुक्ल चतुर्दशी से आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी तक सात चतुर्दशी के सात उपवास, श्रावण कृष्ण नवमी से अगहन कृष्ण नवमी तक नौ नवमी के नौ उपवास।

व्रत पूजा – नवकार मन्त्र पूजा

व्रत जाप मन्त्र– णमोकार महामंत्र

व्रत फल – संकट निवारक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं–नवकार व्रत

श्री पंचमेरू विधान मण्डल

व्रत नाम	-	पुष्पाञ्जलि व्रत
व्रतारम्भ तिथि	-	भाद्रपद, माघ एवं चैत्र माह की शुक्ल पंचमी से नवमी तक
व्रतावधि	-	5 वर्ष
व्रत विधि	-	1. उत्तम विधि- पञ्चमी से नवमी तक 5 उपवास 2. मध्यम विधि- पंचमी, सप्तमी, नवमी का उपवास एवं षष्ठी, अष्टमी का एकाशन 3. जघन्य विधि - पंचमी एवं नवमी का उपवास एवं षष्ठी, सप्तमी एवं अष्टमी का एकाशन
व्रत पूजा	-	श्री पंचमेरू पूजा
व्रत जाप मन्त्र	-	ॐ ह्रीं पंचमेरूस्थाशीति-जिनालयस्थ-जिनेभ्यो नमः।
व्रत फल	-	सातिशय पुण्यदायक

व्रत नाम	–	पंचकल्याणक व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	आषाढ़ कृष्ण द्वितीया
व्रतावधि	–	5 वर्ष
व्रत विधि	–	उपवास पूर्वक करें। प्रथम वर्ष – 24 तीर्थकरों की गर्भ कल्याणक की तिथियों के चौबीस उपवास द्वितीय वर्ष – जन्म कल्याणक की तिथियों के चौबीस उपवास तृतीय वर्ष – तप कल्याणक की तिथियों के चौबीस उपवास चतुर्थ वर्ष – ज्ञान कल्याणक की तिथियों के चौबीस उपवास पचंम वर्ष – निर्वाण कल्याणक की तिथियों के चौबीस उपवास करें।
व्रत पूजा	–	चौबीस तीर्थंकर पूजा एवं जिन तीर्थंकर का कल्याणक हो उनकी पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यों नमः।
व्रत फल	–	मोक्ष पद प्रदायक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं– अनन्त सुख व्रत, कल्याणक व्रत, कल्याणतिलक व्रत, निर्वाण कल्याणक व्रत, सर्वतोभद्र व्रत

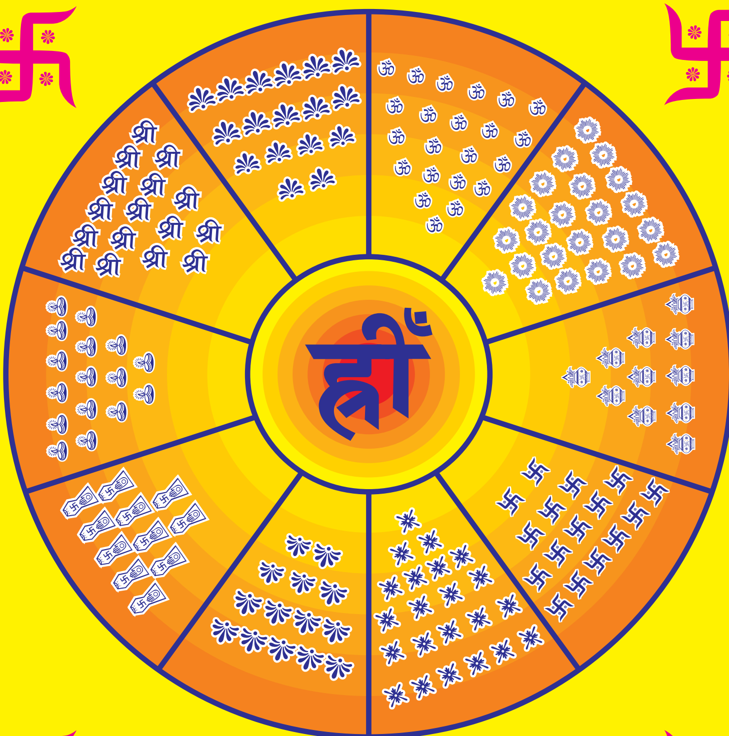

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री दशलक्षण विधान मण्डल

व्रत नाम – दशलक्षण व्रत
व्रतारम्भ तिथि – भाद्र, माघ, चैत्र तीनों माह की शुक्ल पंचमी
व्रतावधि – 10 वर्ष
व्रत विधि – उत्तम, मध्यम, जघन्य की अपेक्षा तीन विधियाँ हैं–

1. उत्तम विधि – दस दिन के दस उपवास
2. मध्यम विधि – पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी इन चार तिथियों में उपवास और शेष छह दिनों में एकाशन
3. जघन्य विधि – दस दिन के दस एकाशन

व्रत पूजा – दशलक्षण पूजा
व्रत जाप मन्त्र – ॐ ह्रीं अर्हन्मुख–कमल–समुद्गताय–उत्तम–क्षमादि–दशलक्षण–धर्मेभ्यो नमः

प्रत्येक दिन जाप

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा–धर्मांगाय नमः।
ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव–धर्मांगाय नमः।
ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव–धर्मांगाय नमः।
ॐ ह्रीं उत्तम शौचधर्मांगाय नमः।
ॐ ह्रीं उत्तम सत्य–धर्मांगाय नमः।
ॐ ह्रीं उत्तम संयम –धर्मांगाय नमः।
ॐ ह्रीं उत्तम तप –धर्मांगाय नमः।
ॐ ह्रीं उत्तम त्याग–धर्मांगाय नमः।
ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन–धर्मांगाय नमः।
ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य–धर्मांगाय नमः।

व्रत फल – आत्म स्वभाव प्राप्तिकारक

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री 1008 पार्श्वनाथ विधान मण्डल

व्रत नाम	–	मोक्षसप्तमी व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	श्रावण शुक्ल सप्तमी
व्रतावधि	–	7 वर्ष
व्रत विधि	–	व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत पूजा	–	श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।
व्रत फल	–	विघ्न विनाशक/सौख्य प्रदायक

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री सिद्धचक्र विधान मण्डल

व्रत नाम	–	सिद्धचक्र व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन में
व्रतावधि	–	उत्कृष्ट 12 वर्ष, मध्यम 6 वर्ष, जघन्य 3 वर्ष
व्रत विधि	–	अष्टमी से पूर्णिमा तक लगातार उपवास या एकाशन
व्रत पूजा	–	सिद्ध पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।
व्रत फल	–	सिद्ध गुणदायक

श्री त्रिकाल चौबीसी विधान मण्डल

व्रत नाम	-	त्रिकालतृतीया व्रत,
व्रतारम्भ तिथि	-	भाद्रपद शुक्ल तृतीया
व्रतावधि	-	3 वर्ष
व्रत विधि	-	प्रत्येक तृतीया के दिन उपवास करें।
व्रत पूजा	-	त्रिकाल चौबीसी पूजा
व्रत जाप मन्त्र	-	ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निर्वाणादि-द्वासप्तति - त्रिकाल - तीर्थंकरेभ्यो नमः।
व्रत फल	-	त्रिलोक पूज्यता प्रदायक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं- चतुर्विंशति दातृभावना व्रत, चतुर्विंशति श्रोतृभावना व्रत, सम्यक्त्व चतुर्विंशति व्रत, समकित चौबीसी व्रत

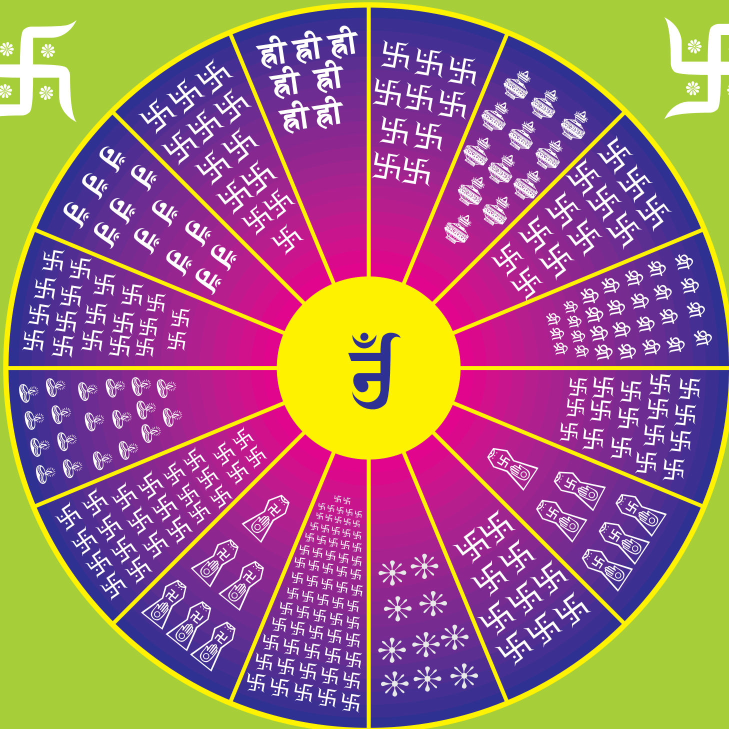

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

सोलहकारण विधान मण्डल

व्रत नाम	–	सोलहकारण व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	भाद्रपद, माघ एवं चैत्र तीनों मास में कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा
व्रतावधि	–	उत्तम सोलहवर्ष, मध्यम पाँच वर्ष, जघन्य एक वर्ष
व्रत विधि	–	इस व्रत की उत्तम, मध्यम एवं जघन्य की अपेक्षा तीन विधियाँ हैं – 1. उत्तम विधि – कृष्ण पक्ष की एकम से दूसरे माह की कृष्ण एकम तक (31 दिन के 31 उपवास) 2. मध्यम विधि – 16 उपवास एवं 16 पारणा पूर्वक (क्रमशः एक उपवास एक पारणा क्रम से) 3. जघन्य विधि – 31 एकाशन। (लगातार)
व्रत पूजा	–	सोलहकारण पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। (प्रत्येक भावना का जाप करें)
व्रत फल	–	तीर्थंकर प्रकृति दायक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं– सोलहकारण – भावना के एक-एक अंग के व्रत में यही विधान होता है।

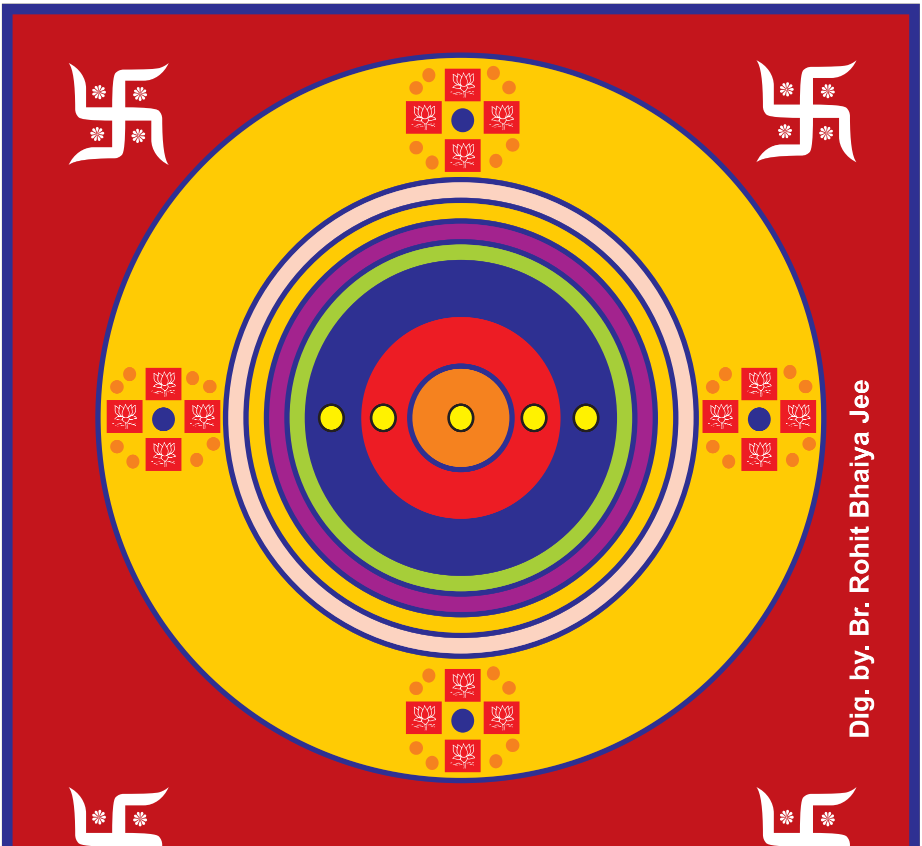

श्री नंदीश्वर विधान मण्डल

व्रत नाम –	नंदीश्वर द्वीप व्रत
व्रतारम्भ तिथि –	अष्टाह्निक पर्व की अष्टमी
व्रतावधि –	एक सौ आठ दिन
व्रत विधि –	56 उपवास एवं 52 पारणा पूर्वक लगातार करें। पूर्वदिशि–अंजनगिरि का बेला एक, पारणा एक दधिमुख– के उपवास चार, पारणा चार, रतिकर के उपवास आठ, पारणा आठ इस प्रकार पूर्वदिशि के चौदह उपवास, पारणा तेरह इसी तरह दक्षिण दिशा, पश्चिम दिशा एवं उत्तर दिशा के उपवास करें।
व्रत पूजा –	नन्दीश्वर द्वीप पूजा
व्रत जाप मन्त्र –	ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे–द्विपंचाशज्जिनालयस्थ–जिनेभ्यो नमः।
व्रत फल –	सातिशय पुण्य सहित सम्यक्त्व प्रदाता

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं– अष्टाह्निक व्रत, नंदीश्वर पंक्ति व्रत, नीतिसागर व्रत

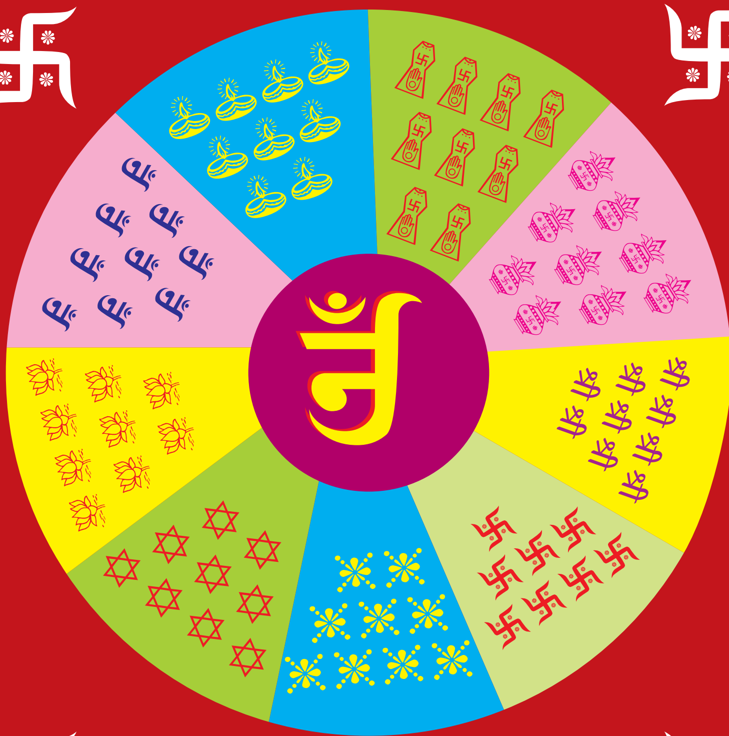

श्री रविव्रत विधान मण्डल

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

व्रत नाम	–	रविवार व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	आषाढ़ शुक्ल का अंतिम रविवार
व्रतावधि	–	9 वर्ष
व्रत विधि	–	9 वर्ष में 81 रविवार इस की चार विधियाँ है 1. प्रथम विधि – प्रति रविवार को प्रोषधोपवास करना। 2. दूसरी विधि – आमिल (इमली-चावल) से एकाशन। 3. तीसरी विधि – एक बार का परोसा भोजन करना। 4. चतुर्थ विधि – एकाशन करना। शक्त्यनुसार विधि पूर्वक करें।
व्रत पूजा	–	श्रीपार्श्वनाथ पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः।
व्रत फल	–	मनोवांछित फल प्रदाता

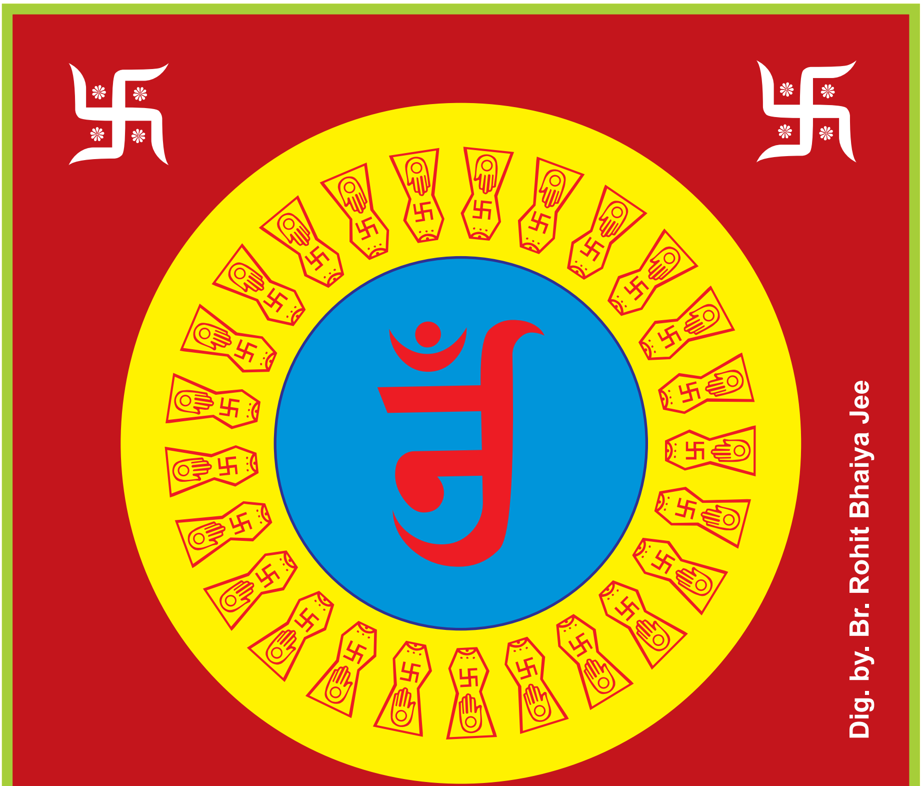

श्री त्रिलोक जिनालय विधान मण्डल

व्रत नाम	-	त्रिलोकसार व्रत,
व्रतारम्भ तिथि	-	किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रतावधि	-	41 दिन
व्रत विधि	-	30 उपवास 11 पारणाएँ लगातार यथा-उपवास 5 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1, उपवास 3 पारणा 1, उपवास 2 पारणा 1, उपवास 1 पारणा, उपवास 2 पारणा 1, उपवास 3 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1, उपवास 3 पारणा 1, उपवास 2 पारणा 1 उपवास 1 पारणा 1
व्रत पूजा	-	अकृत्रिम चैत्यालय पूजा
व्रत जाप मन्त्र	-	ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि-कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः।
व्रत फल	-	उत्कृष्टपद प्रदाता

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं- इन्द्रध्वज व्रत, त्रिलोकतीज व्रत

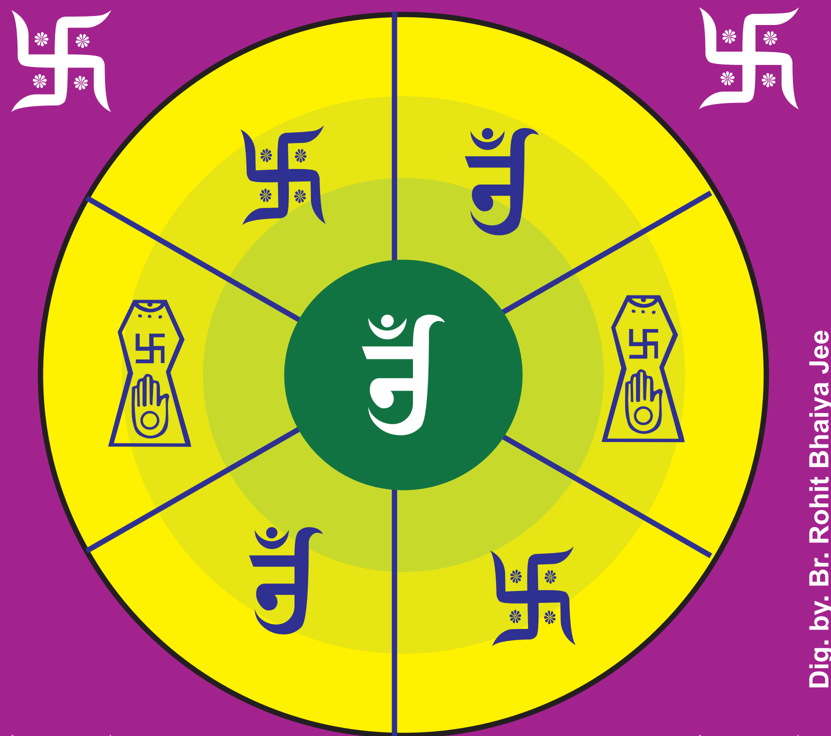

श्री चन्दन षष्ठी विधान मण्डल

व्रत नाम	–	चन्दन षष्ठी व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	भाद्रपद कृष्ण षष्ठी
व्रतावधि	–	6 वर्ष
व्रत विधि	–	भाद्रपद कृष्ण षष्ठी को उपवास करें
व्रत पूजा	–	श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रीं श्रीं क्ली ऐं अर्हं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।
व्रत फल	–	अशुद्धि से हुए अविनय की निवृत्ति हेतु।

श्री जिनगुण संपत्ति विधान मण्डल

व्रत नाम	-	जिनगुण संपत्ति व्रत
व्रतारम्भ तिथि	-	आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा
व्रतावधि	-	63 दिन
व्रत विधि	-	व्रत के दिन उपवास उत्तम-सोलह भावना के 16, प्रतिपदा, पचंकल्याणकों के 5 पंचमी के 5 उपवास, अष्टप्रातिहार्य के 8 अष्टमी के 8 उपवास, दस जन्म के अतिशय के 10 दशमी के 10 उपवास, दस केवलज्ञान के अतिशयों के 10 दशमी के 10 उपवास, चौदह देवकृत अतिशयों के 14 चतुर्दशी के 14 उपवास
व्रत पूजा	-	जिनगुण सम्पत्ति व्रत पूजा
व्रत जाप मन्त्र	-	जिनगुण सम्पत्ति मन्त्रों में से जिस मन्त्र का दिन हो।
व्रत फल	-	सर्वसुख प्रदायक

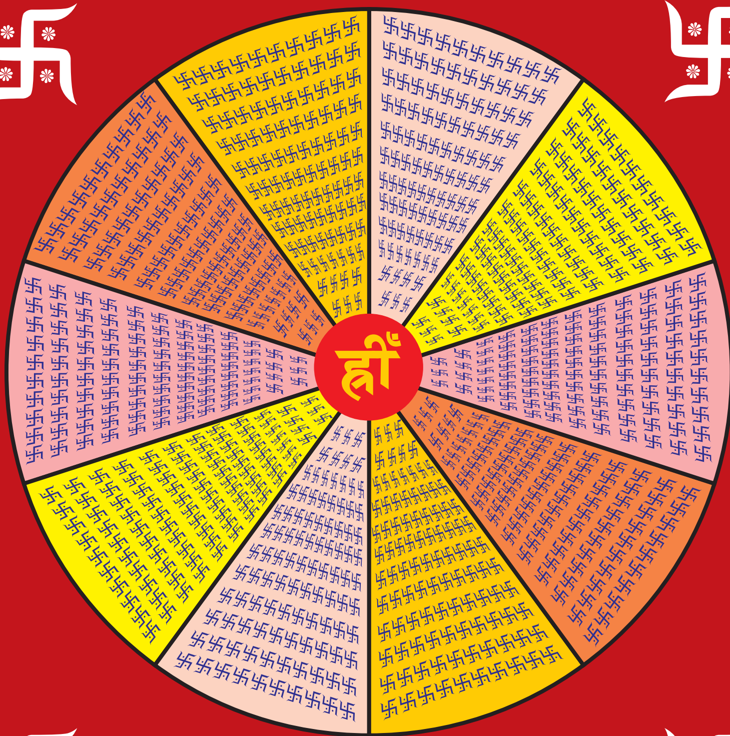

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री जिनसहस्रनाम विधान मण्डल

व्रत नाम	–	जिनसहस्रनाम व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	किसी भी माह की चतुर्दशी
व्रतावधि	–	1008 या 11 दिन
व्रत विधि	–	व्रत के दिन उपवास करें, व्रत अष्टमी एवं चतुर्दशी के दिन करें। सहस्रनाम का पाठ अवश्य करें।
व्रत पूजा	–	सहस्रनाम पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	1. ॐ ह्रीं श्रीमदादिशत-नामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः। (100 दिन तक)
		2. ॐ ह्रीं श्रीदिव्यादिशत-नामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः। (100 दिन तक)
		3. ॐ ह्रीं श्रीस्थविष्ठादिशत-नामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः। (100 दिन तक)
		4. ॐ ह्रीं श्रीमहाशोकध्वजादिशत-नामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः। (100 दिन तक)
		5. ॐ ह्रीं श्रीवृक्षादिशत-नामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः। (100 दिन तक)
		6. ॐ ह्रीं श्रीमहामुन्यादिशत-नामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः। (100 दिन तक)
		7. ॐ ह्रीं श्रीअसंस्कृतादिशत-नामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः। (100 दिन तक)
		8. ॐ ह्रीं श्रीवृहदादिशत-नामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः। (100 दिन तक)
		9. ॐ ह्रीं श्रीत्रिकालदर्श्यादिशत-नामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः। (100 दिन तक)
		10. ॐ ह्रीं श्रीदिग्वासाद्यष्टाधिकशत-नामधारकाय श्रीजिनेन्द्राय नमः। (108 दिन तक)
व्रत फल	–	सद्‌गुण प्रदायक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं- कल्पकुंजव्रत, वस्तु कल्याण व्रत

श्री लब्धि विधान मण्डल

व्रत नाम – लब्धि विधान व्रत

व्रतारम्भ तिथि – भाद्रपद, माघ, चैत्र शुक्ल तिथि में

व्रतावधि – 3 वर्ष

व्रत विधि – इस व्रत की तीन विधियाँ मिलती है:-

प्रथम विधि – अमावस्या का एकाशन कर पड़वा, दोज एवं तृतीया का तेला कर चतुर्थी को पारणा करें।

द्वितीय विधि – भाद्रपद, माघ एवं चैत्रमास में शुक्ल पड़वा एवं तीज का उपवास, दोज एवं चतुर्थी को पारणा करें इस प्रकार छह वर्ष करें।

तृतीय विधि – भाद्रपद, माघ एवं चैत्र माह में शुक्ल पड़वा एवं तीज का एकाशन, दोज का उपवास, चतुर्थी का एकाशन इस प्रकार दो वर्ष में व्रत पूर्ण करें।

व्रत पूजा – श्री महावीर स्वामी पूजा

व्रत जाप मन्त्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीमहावीरस्वामिने नमः।

व्रत फल – शील बुद्धि प्रदाता

Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

श्री रत्नत्रय विधान मण्डल

व्रत नाम	–	रत्नत्रय व्रत
व्रतारम्भ तिथि	–	भाद्रपद, माघ एवं चैत्र तीनों माह की शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी
व्रतावधि	–	उत्कृष्ट 13 वर्ष, मध्यम 8 वर्ष, जघन्य 5 वर्ष एवं 3 वर्ष
व्रत विधि	–	शुक्ल पक्ष की द्वादशी के दिन मध्याह्न भोजन के पश्चात् त्रयोदशी, चतुर्दशी एवं पूर्णिमा इन तीन दिन के उपवास की प्रतिज्ञा करें एवं प्रतिपदा के दिन पारणा करें।
व्रत पूजा	–	रत्नत्रय पूजा
व्रत जाप मन्त्र	–	ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः ।
व्रत फल	–	मोक्षमार्ग प्रदायक

अन्य व्रत जिसमें यह विधान करते हैं– चक्रोदय व्रत, दर्शन विशुद्धि व्रत, सम्यग्दर्शन के प्रत्येक अंग के व्रत, रत्नशोक व्रत, सुदर्शन तप व्रत, त्रिगुणसार व्रत

श्री सप्तऋषि विधान मण्डल
Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee

ह्रीँ
Dig. by. Br. Rohit Bhaiya Jee
श्री सम्मेद शिखर विधान मण्डल

In Memory of Samajratna

Late Rai Bahadur Harakh Chand Jain (Pandya)

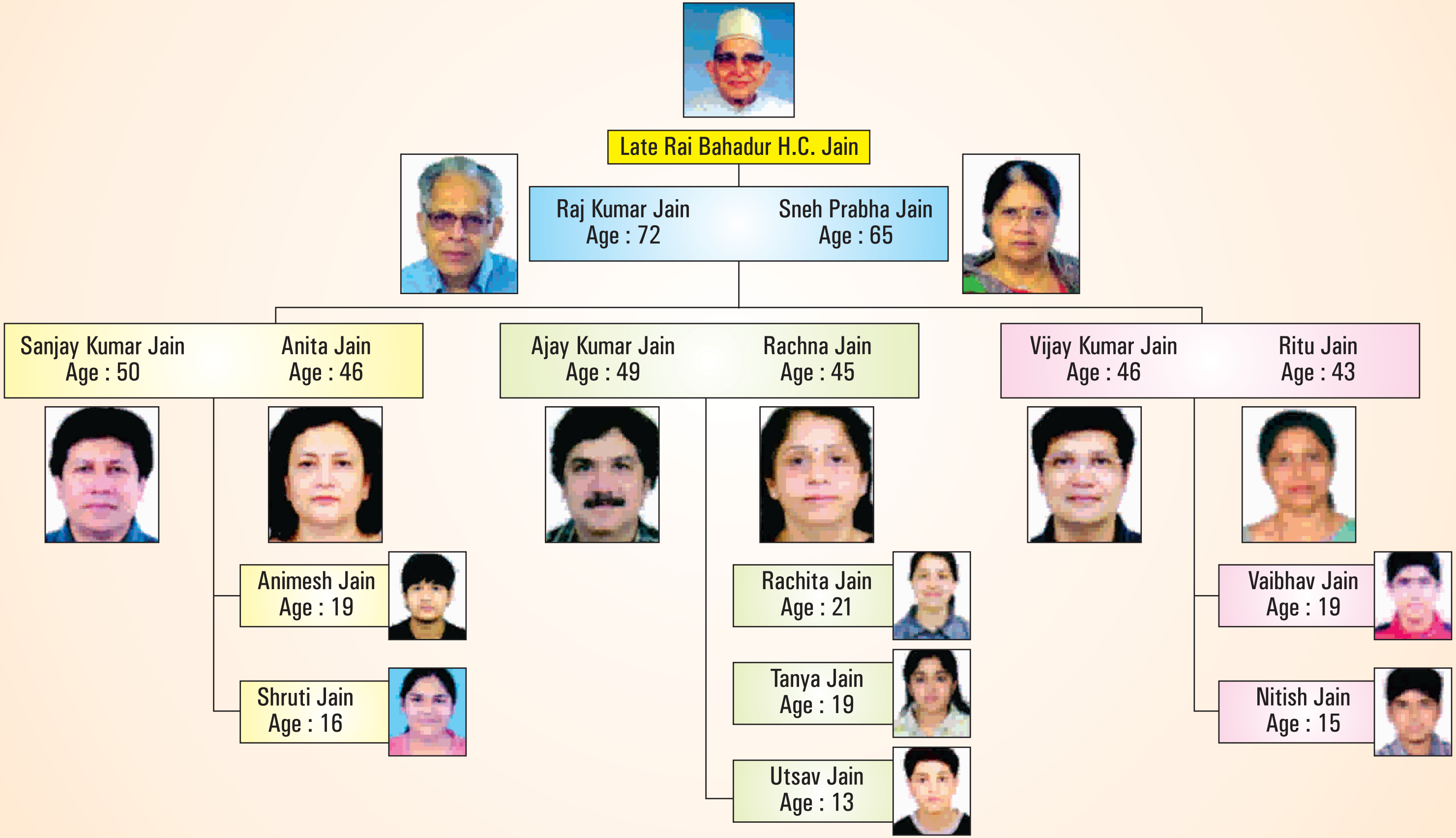

गुरु चरणों में शत्-शत् नमन...

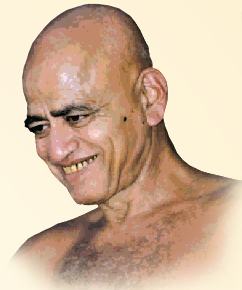

संत शिरोमणि
आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज

परम पूज्य मुनिश्री 108 प्रमाणसागर जी महाराज

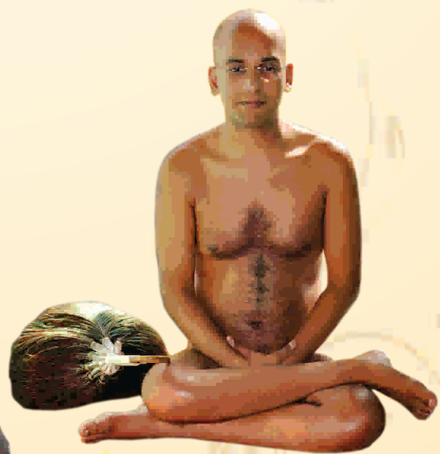

पूज्य मुनिश्री 108 विराटसागर जी महाराज

प्रकाशक :

निर्ग्रन्थ फाउण्डेशन, भोपाल